उपसंहार

भारतीय संस्कृति में भक्ति संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है जिसके बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती। भक्ति संगीत ही भारतीय संस्कृति का मूल आधार है भारत देश में विभिन्न तरह की संस्कृतियों का समावेश होने के कारण यहां पर हर जाति धर्म वर्ग के लोग विभिन्न राज्यों में रहते हैं। विभिन्न राज्यों की सभ्यता एवं संस्कृति के फलस्वरूप ही भक्ति संगीत के अंतर्गत विभिन्न शैलियां विकसित हुई पंजाब प्रदेश भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। यहाँ की भूमि पाँच नदियों से सिंचित होने के साथ–साथ यह धरती गुरुओं, पीरों–पैगंबरों, भक्तो आदि की जन्मभूमि भी है। इसी की भांति भक्ति धारा के अंतर्गत संगीतक शैलियों के माध्यम से भारतीय संगीत को विश्व विख्याती दिलाने में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। शोध प्रबन्ध का विषय भक्ति संगीत धारा के अंतर्गत पंजाब प्रदेश की भूमि पर विकसित सूफियाना गायन से संबंधित है। भक्ति संगीत के प्रचार प्रसार में भारत के विभिन्न प्रदेशों का विशेष स्थान है इन प्रदेशों में विकसित भक्ति संगीत धारा पर आधारित विभिन्न शैलियों की भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है। पंजाब प्रदेश में भक्ति संगीत के अधीन जहां भजन संगीत, गुरमत संगीत का अपना विशेष स्थान है, वहीं सूफी मत विचारधारा से प्रेरित और विकसित सूफी संगीत हैं। सूफियाना गायन ने भी भारतीय संगीत को विशेष ख्याति दिलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिसका श्रेय पंजाब क्षेत्र के गायक कलाकारों को जाता है, जिन्होंने सूफी फकीरों द्वारा रचित सूफी कलामों या वाणी को गायन कर विभिन्न शैलियों के माध्यम से सूफियाना गायन को प्रचारित व प्रसारित किया। जिसके फलस्वरुप वर्तमान में सूफी परम्परा पर अधारित सूफियाना गायन अपनी खास पहचान बनाए हुए हैं।

शोध प्रबन्ध के विषय अनुसार सर्वप्रथम पंजाब क्षेत्र का भारतीय संगीत में योगदान संबंधी बात करने से पूर्व प्रथम पंजाब के शाब्दिक अर्थ की बात करते हुए पंजाब शब्द के नामकरण सम्बन्धी विभिन्न विद्वानों के इतिहासिक तत्वों से प्राप्त जानकारी से पुष्टि होती है कि पांच नदियों की धरती को पंजाब नाम से संबोधित किया जाने लगा। पंजाब प्रदेश की भौगोलिक स्थिति की बात करते हुए विभिन्न

कालांतर में आए परिवर्तनों के फलस्वरुप पंजाब प्रदेश की सीमा कभी बढ़कर दूर दूर तक फैल गई और कालांतर हुकूमतों की वजह से इसके बहुत बड़े भाग को वर्तमान पंजाब क्षेत्र से अलग कर दिया गया जिसमें हरियाणा, हिमाचल, जम्मू कश्मीर का इलाका, पश्चिमी पंजाब का हिस्सा (पाकिस्तान) आदि क्षेत्र आते थे।

इस बात की पुष्टि पंजाब के क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति को प्रस्तुत करने वाले मानचित्रों में देखी जा सकती है। इसके अतिरिक्त पंजाब की इतिहासिक पृष्ठभूमि की विशेषता की बात करते हुए पता चलता है कि पंजाब क्षेत्र की धरती प्राचीन समय से आधुनिक समय तक संगीत कला का मुख्य केंद्र बिंदु रही है और समाज को दिशा प्रदान करने के लिए महान ग्रन्थों की रचना भी इसी धरती की देन है। इसके अतिरिक्त संसार की सबसे प्रसिद्ध और प्राचीन ऋग्वेद रचिता भी यही धरती है पंजाब का इतिहास केवल भारत को ही नहीं बल्कि विश्व को भी दिशा प्रदान करने वाला रहा है।

भक्ति संगीत धारा की बात करते हुए मध्य काल में उत्पन्न हुई भक्ति लहर आंदोलन में जहां पूरे भारत के संतो साधकों भक्तों ने भजन संगीत के द्वारा, सिक्ख गुरुओं ने गुरमत संगीत के द्वारा बहुमूल्य योगदान दिया वहीं पंजाब प्रदेश में कालांतर से आए बदलावों के फलस्वरुप सूफी साधको ने भी भक्ति संगीत के अधीन सूफी विचारधारा को संगीत का आधार देकर सूफियाना गायकी के रूप में भारतीय संगीत को प्रचारित किया। भारतीय समाज में संगीत कला को विशेष सम्मान मिला और लोगों का झुकाव संगीत कला की तरफ होने लगा। परिणामस्वरूप समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा संगीत की तरफ झुकाव होने के कारण और उनके वंशजों द्वारा संगीत परंपरा को आगे बढ़ाने के फलस्वरुप घराना परंपरा प्रचार में आई। इसी परंपरा के अंतर्गत पंजाब प्रदेश में संगीत घराने विकसित हुए जिन्होंने संगीत की विभिन्न शैलियों के प्रचार–प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। वहीं पहले से प्रवाहित भक्ति संगीत के अंतर्गत भजन संगीत, गुरमत संगीत की भांति सूफियाना गायन व सूफी संगीत का प्रचार–प्रसार विभिन्न घरानों द्वारा होने लगा। इन शैलियों के प्रचलन से संगीत घरानों में भिन्नता रही जिसमें पंजाब प्रदेश के शास्त्रीय संगीत से संबंधित घराने, गुरमत संगीत के अन्तर्गत रबाबी घराने और इसी की भांति

सूफियाना संगीत से संबंधित मलेरकोटला रियासत के अधीन सूफियाना गायन के घराने प्रचार प्रसार में आए। जहाँ शास्त्रीय संगीत के घरानों ने शास्त्रीय संगीत के माध्यम से अपने घरानों की शोभा बढ़ाई वहीं प्रसिद्ध संगीतक घरानों के कलाकारों द्वारा सूफियाना कलामों को शास्त्रीय संगीत में शामिल किया जिनमें श्याम चौरासी घराने के विश्व प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक कलाकार उस्ताद सलामत अली–नज़ाकत अली खान साहब के नाम विशेषनीय है। पंजाब प्रदेश का मलेरकोटला शहर वर्तमान में भी सूफियाना गायकी के घरानों में जगत प्रसिद्ध है जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि जहां पंजाब के विभिन्न घरानों ने भारतीय संगीत के विभिन्न विधाओं के प्रचार प्रसार में अपनी भूमिका निभाई वहीं सूफियाना गायन के प्रचार–प्रसार में पंजाब के कलाकारों का विशेष और महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिसके परिणामस्वरूप सूफियाना गायन ने विश्व प्रसिद्धि हासिल की है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पंजाब प्रदेश में जहां भारतीय संस्कृति को अमीर बनाने में विभिन्न क्षेत्रों नें अपनी भूमिका निभाई वहीं संगीत के क्षेत्र में भी विभिन्न संगीतक शैलियों के माध्यम से पंजाब के कलाकारों ने भारतीय संगीत को शिखर तक पहुंचाया है।

शोध प्रबंध के विषय के अनुरूप सूफी संगीत के उद्‌भव एवं विकास सम्बन्धी बात करते हुए द्वितीय अध्याय में शोधार्थी द्वारा सर्वप्रथम सूफी शब्द की उत्पत्ति संबंधी विद्वानों तथा सूफी साहित्य संबंधी पुस्तक सामग्री के तथ्यों की पुष्टि हेतु प्राप्त मतों का विश्लेषण करते हुए स्पष्ट हो जाता है कि सूफी शब्द ऐसे फकीरों के लिए प्रयोग किया गया, जिन्होंने अपना सारा जीवन उस अल्लाह ईश्वर की इबादत के लिए समर्पित कर दिया और अवाम को सत्य के मार्ग की ओर अग्रसर होने का पैगाम दिया इसी की भांति सूफीमत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने हेतु सूफी विचारधारा की उत्पत्ति संबंधी विचारों का उल्लेख करते हुए एकत्रित तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि सूफीमत या सूफीवाद एक इस्लामी मत है जिसका उदभव अरब में हुआ। इस्लाम धर्म की सोच में से उपजी हुई लहर ही सूफीमत है जो इस्लाम से भिन्न ना होते हुए इस्लाम धर्म की रूहानियत को स्पष्ट करते हुए आवाम को एकता में रहने के लिए प्रेरित करता है। सूफीमत वास्तविकता में जीवन निर्वाह

का ही दूसरा नाम है जो बाहरी दिखावे की बजाय अंतर आत्मा को पवित्र करने का संदेश देता है। इस तरह सूफीमत विचारधारा का प्रचार–प्रसार बढ़ता गया और विभिन्न देशों के अरब देशों के साथ होने वाले व्यापारिक सम्बन्धों के परिणामस्वरूप सूफीमत विचारधारा ने भारत में भी अपना प्रभाव बना लिया और पंजाब प्रदेश भारत का मुख्य द्वार होने के कारण सूफी फकीरों ने सर्वप्रथम इस भूमि पर अपने ठिकाने बनाएं। जो आगे चलकर सूफी संप्रदाय के रूप में प्रचार में आए। जिनमें चिश्ती सिलसिला, सोहरावर्दी सिलसिला, नक्शबंदी सिलसिला और कादरी सिलसिला आदि प्रमुख हैं। इन सिलसिलों द्वारा सूफीमत के प्रचार हेतु संगीत को आधार बनाकर प्रचार शुरू किया गया जो आगे चलकर सूफियाना गायन कहलाया। इन सभी प्रमुख सिलसिलों के प्रचार प्रसार के फलस्वरूप विभिन्न शाखाएं प्रचलित हुईं जिन्होंने पूरे पंजाब में सूफीमत का प्रचार प्रसार किया। इन सम्प्रदाओं से सम्बन्धित अनुयायी या प्रसिद्ध सूफी फकीर हुए जिनके बारे में तृतीय अध्याय में वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत पंजाब के प्रसिद्ध सूफी फकीरों में बाबा फरीद, शाह हुसैन, सुल्तान बाहू, हाशम शाह, बुल्ले शाह, गुलाम फरीद आदि नाम विशेषनीय हैं। इन सब फकीरों ने अपनी वाणी द्वारा उस अल्लाह की इबादत संबंधी आध्यात्मिक अनुभवों को विभिन्न काव्य रूपों में रचित किया। यही काव्य रूप संगीत का आधार पाकर सूफियाना गायन की विभिन्न संगीतक शैलियों के रूप में प्रचार में आए। इन सूफियाना गायन शैलियों में हमद, नाअत, मनकबत, कौल, कलबाना, काफी, श्लोक, ग़ज़ल, कव्वाली, दौहड़े, गंढां, सींहरफी, आदि हैं। इन सब शैलियों में कव्वाली और काफी विश्व प्रसिद्ध सूफियाना गायन संबंधित गायन शैलियां हैं और वर्तमान में भी सूफियाना गायन के अधीन इन शैलियों का प्रचार–प्रसार पंजाब के गायक कलाकारों द्वारा प्रवाहित है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत सूफियाना गायन की शुरुआत से लेकर वर्तमान तक सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में मुख्य भूमिका के रूप में जिन साधनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उनमें विशेष रूप में सूफी फकीरों के इबादतनुमा स्थल दरगाहें हैं। इसके अतिरिक्त सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार के अधीन माध्यमों के बारे में भी प्रस्तुत किया है जिसके अंतर्गत दरगाहों के अर्थ स्पष्ट करते हुए बताया

गया है कि दरगाह किसी प्रसिद्ध सूफी संत की सच्ची इबादत का प्रमाण हैं जैसे सूफी फकीर ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती अजमेर की दरगाह, हाजी अली की दरगाह, निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह, बू–अली कलंदर पानीपत की दरगाह आदि विश्व प्रसिद्ध दरगाहें हैं। इसी तरह शोध प्रबन्ध के विषय के अनुरूप पंजाब प्रदेश में सूफीमत रूपी पौधों को विकसित करने में प्रसिद्ध सूफी फकीरों की दरगाहें पंजाब प्रदेश में निर्मित हैं। परन्तु शोध प्रबन्ध में कुछ चुनिन्दा सूफी फकीरों की दरगाहों का वर्णन किया गया है और समय–समय पर सूफी फकीरों के अनुयायियों द्वारा उनकी याद में उर्स करवाए जाते हैं जिसमें सूफियाना गायन महफिलों की प्रस्तुति विशेष रहती है और सूफियाना गायकी से जुड़े वंशजों द्वारा परंपरागत रुप में सूफियाना संगीतक महफिलों का आगाज़ किया जाता है और वर्तमान में भी यह परंपरा प्रचलित है। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए शोधार्थी द्वारा दरगाहों के अतिरिक्त अन्य सूफियाना गायन के साधनों की बात करते हुए विभिन्न स्त्रोतों का ज़िक्र किया गया है जिनमें निजी महफिलें, ग्रामीण अथवा संस्कृत आधारित लोक मेले आदि विशेषणीय हैं। इसी के साथ जहां प्रयोगात्मक रूप में कलाकार सूफियाना गायन का प्रचार प्रसार कर रहे हैं वहीं शिक्षण संस्थाएं भी सूफी साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों को सूफी परम्परा से अवगत करवाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसी की भांति गैर शिक्षण संस्थाओं के अंतर्गत वर्तमान में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने भी पूर्ण सहयोग दिया है जिसके अंतर्गत प्रिंट मीडिया के अधीन अखबार, मासिक पत्रिकाएं, सूफियाना गायन व सूफीमत संबंधी पुस्तकें आदि। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अधीन रेडियो, दूरदर्शन, सोशल मीडिया, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि सूफियाना गायन के प्रचार–प्रसार में माध्यम के रूप में विशेष भूमिका निभा रहे हैं। इसके अतिरिक्त मनोरंजन का सबसे बड़ा माध्यम चित्रपट भी सूफियाना गायन से वंचित नहीं हो पाया और सूफियाना गायन पर आधारित प्रस्तुतियों को भी चित्रपट में शामिल कर सूफियाना गायन के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान दे रहा है जिससे साधारण जनसमूह भी सूफियाना गायन की कव्वाली और काफी विद्या से अवगत हुआ और हो रहा है। जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जहां सूफियाना गायन के शुरुआती दौर में सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार के सीमित साधन थे,

वहीं कालांतर से आए परिवर्तनों के फलस्वरुप वर्तमान में तकनीकी युग के भिन्न–भिन्न माध्यमों के बढ़ने की वजह से सूफियाना गायन विश्व प्रसिद्ध हो रहा है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत सूफियाना गायन के आरम्भ से लेकर वर्तमान तक पंजाब के गायक कलाकारों ने अपना जीवन समर्पित कर विशेष योगदान दिया है। पंजाब के गायक कलाकारों ने पीढ़ी दर पीढ़ी सूफियाना गायन से वर्तमान के जनमानस को अवगत करवाया है और ऐसी रूहानियत भरी सूफियाना गायकी का परिणाम ही है कि आज सूफियाना गायकी विश्व प्रसिद्ध होती जा रही है।

जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी कला या गायन शैली का प्रचलन तभी होगा जब उस विधा से जुड़े हुए गायक कलाकार अपनी समर्पित भावना से जुड़े रहेंगे और प्रचारित करते रहेंगे। सूफी परम्परा के अन्तर्गत जो सूफी फकीरों की रचनाएं ज़्यादा प्रचलन में नहीं थी या लिखित रूप तक ही सीमित थीं, उन सब रचनाओं को गायक कलाकारों ने विभिन्न शैलियों द्वारा प्रचारित कर जनसाधारण में लोकप्रिय बनाया। इसके अतिरिक्त पंजाब की विभिन्न गायन शैलियों से जुड़े हुए कलाकारों द्वारा सूफियाना रचनाओं को अपनी प्रस्तुतियों का हिस्सा बनाया गया जो कि सूफी परम्परा से जुड़े हुए कलाकारों की सच्ची लगन का परिणाम है कि लोक गायक, शास्त्रीय कलाकार, अर्द्धशास्त्री कलाकारों द्वारा सूफी रचनाओं एवं गायन रूपों को अपनी गायन प्रस्तुतियों में शामिल कर प्रचारित किया गया और आज भी किया जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप इन कलाकारों की सूफियाना गायन रचनाओं के कारण विशेष पहचान बनी। इसी की भांति पंजाब की ढाडी गायन परम्परा में लोक–कथाओं और किस्सों का गायन करने वाले कलाकारों द्वारा सूफियाना गायन रचनाओं को अपनी गायकी में शामिल किया गया और सूफियाना गायन के प्रचार–प्रसार हेतु सूफी ढाडियों के रूप में विशेष पहचान मिली। जिसके फलस्वरूप सूफी ढाडी नाम से सम्बोधित किए जाने लगे जो कि सूफियाना गायन परम्परा की लोकप्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जहां सूफियाना गायन परम्परा को प्रचारित करने में पुरूष गायक कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान है वहीं महिला कलाकारों द्वारा भी सूफियाना गायन को

प्रचारित करने में विशेष भूमिका रही है जिनका वर्णन इस अध्याय में किया गया है। साथ ही महिला कलाकारों को जनसाधारण का सम्मान भी मिला है। पंजाब के वर्तमान युवा महिला कलाकारों में नूराँ सिस्टर्स, ममता जोशी आदि नाम वर्णनीय हैं। वर्तमान में मौजूदा महिला कलाकारों को सूफियाना गायन में मिल रहे सम्मान एवं प्रोत्साहन के फलस्वरूप सैंकड़ों युवा महिला कलाकार सूफियाना गायन की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

इसी तरह वर्तमान सुगम संगीत के अन्तर्गत युवा कलाकार सूफियाना गायन के प्रभाव के परिणामस्वरूप सूफियाना परम्परा पर आधारित रचनाओं की शब्दावली को सुगम संगीत के अर्न्तगत आने वाले गायन रूपों में भी प्रयोग करते हैं जिसे सूफीनुमा गायन की संज्ञा दी जाती है। क्योंकि सूफी विचारधारा की ओर अग्रसर होने का रास्ता ही इश्क मिजाज़ी से इश्क हकीकी की ओर जाना है। जिसके फलस्वरूप सुगम संगीत के कलाकार धीरे–धीरे सूफीनुमा रचनाओं से परिवर्तित होकर सूफियाना गायन परम्परा की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं।

इसी तरह सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में जहां पंजाब के गायक कलाकारों का विशेष स्थान है वहीं इसी परम्परा के प्रचार प्रसार में संगीतक गुणीजनों का अहम स्थान है।जिसके अर्तगत संगीतक गुरूजनों से साक्षात्कार कर वर्तमान पंजाब में सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में उनका दृष्टिकोण एवं योगदान सम्बन्धी वार्तालाप को छष्ठम अध्याय में प्रस्तुत किया गया है। साक्षात्कार से ज्ञात होता है कि सूफियाना गायन में संगीत विद्वानों का प्रत्यक्ष रूप से न सही अपितु अप्रत्यक्ष रूप से एक दिशा–निर्देशक की भांति बहुत अहम योगदान रहा है। सूफियाना गायन की तालीम चाहे गायक कलाकार सूफी परम्परा से जुड़े हुए घरानों से प्राप्त करते हैं परन्तु उन कलाकारों ने सूफियाना गायन की सूक्ष्म बारीकियों को संगीतक विद्वानों की शरण में जाकर ही प्राप्त करते हैं क्योंकि संगीतक विद्वान प्रयोगात्मक पक्ष के साथ–साथ शास्त्रपक्ष से भी जुड़े रहते हैं।

संगीतक गुरूजन जहां भारतीय संगीत की विभिन्न विधाओं की समझ रखते हैं वहीं भक्ति संगीत धारा की विभिन्न शैलियों का भी ज्ञान रखते हैं। जिसके फलस्वरूप संगीतक गुणीजन सूफियाना बंदिशों से जहां अपने शिष्यों को अवगत

करवाते हैं वहीं सूफियाना गायन के प्रसार प्रसार के लिए विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को अकादमिक क्षेत्रों में मंच प्रदान कर प्रोत्साहित करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप आगे चलकर बहुत सारे गायक कलाकार विभिन्न गायन शैलियों के प्रचार–प्रसार की भांति सूफियाना गायन का भी प्रचार प्रसार करते हैं लेकिन इन कलाकारों को आर्थिक हालातों के चलते मजबूरी में विभिन्न तरह के गायन रूपों का भी सहारा लेना पड़ता है। दूसरी तरफ बहुत से गुणीजन जो सूफियाना गायन की अच्छी समझ रखते हैं, वे बाज़ारीकरण की तकनीकों को अपना नहीं पाते जिसके कारण वे ज़्यादा प्रसिद्धि हासिल नहीं कर पाते। साथ ही संगीत गुणीजन अपने शिष्यों को संगीत के विभिन्न पहलुओं एवं संगीत गहराईयों की शिक्षा देने में व्यस्त रहते हैं और संगीत जगत में स्थिर मार्ग की भांति कार्यरत रहते हैं जिसपर चलपर सैंकड़ों संगीत साधक आगे बढ़ते रहते हैं और संगीत जगत में अपनी विशेष भूमिका निभाते हैं।

उपरोक्त वार्तालाप से स्पष्ट हो जाता है कि सूफी परम्परा के अन्तर्गत सूफियना गायन जहां समाज को संगीत आनन्द प्रदान करता हैं वहीं आपसी भेदभाव को खत्म कर इश्क हकीकी की ओर अग्रसर होने को प्रेरित करता है। सूफियाना गायन परम्परा की लोकप्रियता का ही प्रमाण है कि चाहे श्रोतागण सूफियाना परम्परा से परिचित हो या न हो लेकिन सूफियाना गायन की प्रसिद्धि के कारण महफिल में खुद ब खुद सूफियाना रंग में रंगे जाते हैं और स्वयं भी गायन करने लग जाते हैं। शोधार्थी द्वारा कुछ विश्व–प्रसिद्ध सूफी कलामों का वर्णन भी शोध प्रबंध के छष्ठम् अध्याय में प्रस्तुत किया गया है जिसके अंतर्गत प्रसिद्ध सूफी रचनाओं की सूची को दिया गया है अथवा उनमें से कुछ चुनिंदा स्वरलिपियों को भी इस अध्याय में पस्तुत किया गया है चाहे वह मुद्रित रूप से प्राप्त की गई, हो चाहे शोधार्थी द्वारा स्वयं स्वरलिपिबद्ध करके सूफियाना गायन के प्रसिद्ध कलामों की लोकप्रियता को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

अतः यह कहना न्याय संगत होगा कि सूफियाना गायन एवं उनके प्रसिद्ध सूफी कलामों की लोकप्रियता का श्रेय पंजाब के गायक कलाकार को ही जाता है जिन्होंने ऐसी रूहानियत भरी सूफी परम्परा आधारित सूफियाना गायन को विश्व

प्रसिद्ध करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो पंजाब की आध्यात्मिक धारा के अन्तर्गत सूफियाना गायन के रूप में भारतीय संगीत को प्रचारित व प्रसारित करते हुए विश्व संगीत में अपना विलक्षण स्थान बनाए हुए हैं

शोध सम्बंधी भावी संभावनाएं :

किसी भी शोध कार्य के प्रत्येक पहलू को किसी एक व्यक्ति द्वारा पूर्ण रूप से उजागर किया जाना असंभव सा प्रतीत होता है। उसी की भांति प्रस्तुत शोध प्रबंध सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों का योगदान को संपन्न करने का प्रयास किया गया है। परंतु यह शोध कार्य करते समय कई नवीन संभावनाएं शोधार्थी की दृष्टि में आई हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि भविष्य में इन कार्यों पर शोध करने की संभावना प्रतीत होती है।

- पंजाब की संगीत परम्परा में आध्यात्मिक संगीत के अंतर्गत विभिन्न गायन शैलियां।
- पंजाब से संबंधित सूफी फकीरों की रचनाओं में काव्यात्मक भिन्नता
- सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में शिक्षण संस्थाओं का योगदान
- सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में संगीत शिक्षकों का योगदान
- सूफी परंपरा के प्रचार प्रसार में शास्त्रीय संगीत कलाकारों का योगदान
- सूफी परंपरा के प्रचार प्रसार में लोक गायक कलाकारों का योगदान
- सूफियाना संगीत का विभिन्न गायन रूपों में स्थान
- सूफी परंपरा का वर्तमान में बढ़ता प्रचलन
- सूफी परंपरा को विश्व प्रसिद्ध करने में चित्रपट का योगदान